INDIAN PERFUMES

Indian perfumery dates back to the Indus Valley Civilization running through the Gupta period up to the Mauryan periods. The great poet Kalidas, makes detailed reference to the use of fragrances by the Protagonist of his plays. In 1469, a ruler Ghiyath Shah the Sultan of Malwa, patronised the book The Ni'matnama, or the Book of Delights, which records two of the ancient world's most sophisticated traditions of perfumery: that emanating from Persia and Arabia, on the one hand and the ancient Indian tradition that goes back to the time of the Vedas on the other. In the heart of the old city of Delhi, in Chandni Chowk, as also in the old cities of Agra, Lucknow and Hyderabad, there still exist perfumers whose family had been engaged in perfumery and who continue the ancient Indian tradition of ittar-making: oil-based scent manufacturing.

SANDALWOOD - is heavy, yellow and fine-grained and unlike many other aromatic woods, it retains its fragrance for decades. Sandalwood oil is extracted from the woods for use. Both the wood and the oil produce a distinctive fragrance that has been highly valued for centuries in India. Warm, woody and comforting, sandalwood has a lingering quality that makes it the perfect sophisticated unisex fragrance. Its warm notes make it the ideal winter scent and, combined with floral accords, it adds a spicy quality to summer perfumes. Smooth, rich and essentially soft, its notes work well with accords of vanilla, amber, patchouli, lavender and cedar wood. Sandalwood oil has a distinctive soft, smooth, creamy and milky precious-wood scent. It imparts a long-lasting, woody base to perfumes. When used in smaller proportions in a perfume, it acts as a fixative, enhancing the longevity of other, more volatile, materials in the composite. Sandalwood is also a key ingredient in the floral fragrance family when combined with white florals such as jasmine, gardenia, plumeria, orange blossom, tuberose, etc. Sandalwood oil is widely used in India in the cosmetic and perfumery industry since ancient times.

JASMINE is one of the oldest known and most widely-used botanical scents and is a popular household perfume. Jasmine ittar was the favourite perfume of the Nizams of the Hyderabad State. The perfume is derived from the flower of shrubs and vines in the olive family (Oleaceae). Indian Jasmine grows mainly in Uttar Pradesh, West Bengal, Western Ghats and Southern India. It is known as Juhi (Hindi), Jui (Bengali), Usimalligai (Tamil) etc. and holds great significance in Indian culture. Jasmine has a sweet, warm, floral scent that can be both slightly heady and relaxing with fruity undertones. The fragrance of jasmine is synonymous with our culture in the forms of spirituality, tradition and also medicine. *Jasminum sambac* fragrance has rejuvenating, boosting and energizing properties, which makes it a natural fragrance, while *Jasminum grandiflorum* is one of the most prominent scents and it has highly unique and incredibly intense aroma. Essential oil in flowers is extracted through enfleurage/solvent methods which is widely used for production of jasmine perfume in India. The perfume is deep brown with a golden tinge with a thick consistency, having a strong aroma and generally blends well with all oils. Jasmine has been concluded as the "King of Oils". It is also interesting to note that it takes 8,000 carefully hand-picked blossoms to produce 1 gram (about 1 ml.) of Jasmine Absolute.

Department of Posts is pleased to release a set of two fragrant Commemorative Postage Stamps each and a Miniature Sheet each on Sandalwood and Jasmine as part of the series on Indian Perfumes.

Credits:

Stamps/Miniature Sheets/First Day Cover/ Information Brochure	:	Smt Bharati Mirchandani
Cancellation Cachet	:	Smt Nenu Gupta
Text	:	Shri Pallab Bose

भारतीय इत्र

भारतीय इत्र व्यवसाय, सिंधु घाटी की सभ्यता से लेकर गुप्तकाल से मौर्य काल तक अस्तित्व में रहा है। महान कवि कालिदास ने अपने नाटकों के प्रमुख किरदारों के माध्यम से सुगंधों के प्रयोग के बारे में विस्तृत संदर्भ दिए हैं। सन् 1469 में, मालवा सल्तनत के शासक, घियथ शाही के समय में 'निमतनामा', अर्थात् 'बुक ऑफ डिलाइट' को काफी पसन्द किया गया था, जिसमें विश्व की प्राचीनतम, सर्वाधिक परिष्कृत इत्र व्यवसाय की दो परम्पराओं का वर्णन किया गया है। इस पुस्तक में, जहां एक ओर फारस और अरब से प्रारंभ, परम्परा का वर्णन किया गया है, तो दूसरी ओर वैदिक काल में वर्णित प्राचीन भारतीय परम्परा का वर्णन मिलता है। दिल्ली के मध्य में स्थित पुरानी दिल्ली के चांदनी चौक में तथा पुराने शहरों आगरा, लखनऊ और हैदराबाद में अभी भी ऐसे इत्र निर्माता हैं, जिनके परिवार इत्र व्यवसाय से जुड़े रहे हैं और जो आज भी इत्र–निर्माण की पुरानी परम्परा तेल–आधारित सुगंधों के उत्पादन को जारी रखे हुए हैं।

चंदन : यह एक वजनी, पीले रंग का, महीन–दानेदार काष्ठ होता है और अन्य अनेक सुगंधित काष्ठों से भिन्न होता है जिसकी सुगंध दशकों तक बनी रहती है। इसकी लकड़ी से चंदन का तेल निकाला जाता है जो बहुत उपयोगी होता है। काष्ठ और तेल, दोनों ही एक विशिष्ट प्रकार की सुगंध देते हैं, जिसे भारत में सदियों से अत्यधिक महत्व दिया जाता रहा है। चंदन की खुशबू गर्माहट भरी, काष्ठ जैसी और आनंद देने वाली होती है, जिसका असर बहुत देर तक बना रहता है, इसलिए चंदन की खुशबू महिलाओं और पुरुषों दोनों ही में समान रूप से लोकप्रिय है। ऊष्ण तासीर होने के कारण चंदन, सर्दी के मौसम के लिए उपयुक्त सुगंध है और विभिन्न पुष्पों की सुगंध के साथ जब इसका संयोजन किया जाता है, तो इसमें कुछ ऐसा तीखापन आ जाता है जो इसे ग्रीष्म ऋतु के लिए बेहतरीन सुगंध बना देता है। चंदन की मोहक, समृद्ध और मृदु तासीर वैनिला, अम्बर, पचौली, लैवेण्डर और देवदार की सुगंध के साथ मिलकर अलग प्रभाव पैदा करती है। चंदन के तेल की एक विशिष्ट मृदु, मोहक और भीनी–भीनी कीमती काष्ठ–जैसी सुगंध होती है। यह प्राच्य, काष्ठ से प्राप्त सुगंधों को एक ऐसा आधार प्रदान करता है, जिसका असर देर तक रहता है और साथ ही फूलों भरी और सिट्रस सुगंधों को ऐसा बना देता है कि उनका असर देर तक बना रहे। किसी इत्र में जब इसका थोड़ा–सा अंश मिला लिया जाए तो यह, उस मिश्रण के अधिक परिवर्तनशील (शीघ्र वाष्पशील) सामग्रियों का प्रभाव बढ़ाते हुए, एक फिक्सेटिव के रूप में कार्य करता है।

चंदन को जब श्वेत फूलों, जैसे चमेली, गार्डेनिया, सदाबहार, नारंगी फूल, रजनीगंधा आदि जैसे फूलों के साथ मिलाया जाता है, फूलों वाली सभी प्रकार की सुगंधों के लिए चंदन एक मुख्य तत्व बन जाता है। चंदन के तेल को भारत में, प्राचीन काल से सौंदर्य प्रसाधनों और इत्र उद्योग में व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है।

चमेली : चमेली की सुगंध प्राचीन समय से सर्वाधिक व्यापक रूप से इस्तेमाल की जाने वाली वनस्पति–आधारित सुगंध है। यह घर–घर में इस्तेमाल किए जाने वाला एक लोकप्रिय इत्र है। चमेली का इत्र हैदराबाद रियासत के निजामों का पसंदीदा इत्र था। यह इत्र, जैतून प्रजाति (ओलिएसी) के फूलों की झाड़ियों और लताओं से प्राप्त किया जाता है। भारत में चमेली मुख्यतः उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, पश्चिमी घाट और दक्षिण भारत में उगाई जाती है। इसे जूही (हिन्दी), जुई (बांग्ला), उसिमल्लिगई (तमिल) आदि नाम से भी जाना जाता है और भारतीय संस्कृति में इसका बहुत अधिक महत्व है। चमेली की सुगंध मधुर और गर्माहट भरी होती है जो कभी मोहक तो कभी फलों की सुगंध का एहसास कराती हुई, सुकून देने वाली होती है। अपने आध्यात्मिक, परम्परागत और चिकित्सीय गुणों के कारण चमेली की सुगंध हमारी संस्कृति का पर्याय है। जैस्मिनम सम्बाक (मोगरा) की सुगंध अत्यंत मधुर, मनोरम और स्फूर्तिदायक गुणों से परिपूर्ण होती है जो इसे एक प्राकृतिक सुगंध बनाती है। जैस्मिनम ग्रैंडिफ्लोरम की खुशबू विशिष्ट सुगंधों में से एक है। इसकी सुगंध बहुत ही अद्‌भुत और अत्यंत तीखी होती है। एनफ्लूरेज / विलायक (सॉलवेंट) पद्धतियों का प्रयोग करते हुए फूलों का अर्क (एसेंशियल ऑयल) प्राप्त किया जाता है। भारत में चमेली इत्र बनाने में इसका प्रयोग व्यापक रूप से किया जाता है। इस इत्र का रंग सुनहरी आभा लिए, गहरे भूरे रंग का होता है। देखने में यह गाढ़ा होता है और तीव्र खुशबूदार होता है, जो सामान्यतः सभी प्रकार के तेलों के साथ अच्छे से मिल जाता है। चमेली को "तेलों का राजा" के रूप में जाना जाता है। यह जानना काफी रोचक है कि एक ग्राम (लगभग एक मि. लि.) चमेली के शुद्ध अर्क प्राप्त करने के लिए सावधानी–पूर्वक चुने गए 8000 फूलों का उपयोग किया जाता है।

डाक विभाग, भारतीय इत्र विषय की अगली श्रृंखला में चंदन और चमेली पर आधारित दो सुगंधित स्मारक डाक–टिकटों का सेट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:–

डाक–टिकट / मिनियेचर शीट / प्रथम दिवस आवरण / सूचना विवरणिका : श्रीमती भारती मीरचंदानी

विरूपण मोहर : श्रीमती नीनू गुप्ता

पाठ : श्री पल्लब बोस

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य वर्ग	: 2500 पैसा, (2) 2500 पैसा (2)
Denomination	: 2500 p (2), 2500 p (2)
मुद्रित डाक-टिकटें	: 8.0 लाख प्रत्येक
Stamps Printed	: 8.0 Lakh each
मुद्रित मिनियेचर शीट	: 2.0 लाख प्रत्येक
Miniature Sheets Printed	: 2.0 Lakh each
मुद्रण प्रक्रिया	: वेट ऑफसेट
Printing Process	: Wet Offset
मुद्रक	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	: Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

मूल्य: ₹ 5.00